www.xtrapapers.com

M12/1/A1HIN/SP1/HIN/TZ0/XX

22120131

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Thursday 10 May 2012 (morning)
Jeudi 10 mai 2012 (matin)
Jueves 10 de mayo de 2012 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.
- The maximum mark for this examination paper is *[25 marks]*.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est *[25 points]*.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es *[25 puntos]*.

© International Baccalaureate Organization 2012

www.xtrapapers.com

*नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, १ तथा २। इन दोनों में से किसी **एक** पर व्याख्या लिखिए।*

१.

मुरली या मोबाइल

न्यूज चैनल में धमाकेदार न्यूज वृंदावन में बॉके बिहारी जी के मंदिर के पुजारी जी ने बॉके बिहारी जी की मुरली के स्थान पर मोबाइल पकड़ा दिया। उसे बुरी तरीके से हॅसी आ जाती है। वह पत्नी को बुलाकर न्यूज दिखाता है और कहता है-अब भगवान आधुनिकता के रंग में रंग गए हैं। मुरली के स्थान पर मोबाइलधारी हो गए हैं। अब मोबाइल का रिंगटोन सुनाकर गोपियों को बुलाएँगे। पत्नी भी न्यूज देखकर हॅसने लगती हैं। चारों तरफ इसी समाचार के गरमागरम चर्चे हैं हालॉकि बॉके बिहारी जी के पुजारी जी को पूरी स्वतंत्रता है कि वह अपने मन से भगवान का श्रृंगार करें, पर मुरली के स्थान पर मोबाइल, आस्था इस बात को नहीं पचा पा रही है। दूसरे दिन पुजारी के विरोध में प्रदर्शनकारी वृंदावन की सड़कों पर उतर आए हैं। पुजारी जी को त्यागपत्र देने को कहा जा रहा है। कोई माने या न माने पर उसके लिए तो वह भगवान ही थे जो आज से दस वर्ष पूर्व उसकी सहायता के लिए आए थे। उसे आज भी वह रात अच्छी तरह याद है जब आइ. ए. एस की लिखित परीक्षा में चयन होने के बाद उसे इंटरव्यू के लिए दिल्ली जाना था। वह तमाम सपने संजोए हुए मॉ-बाप, भाई-बहन के आशाओं का केन्द्र विन्दु बनकर मॉ की तमाम हिदायतों के साथ रिजेर्वेशन बॉगी में अपने छोटे से शहर से इन्टरव्यू देने के लिए दिल्ली जाने के लिए रवाना हुआ। रात्रि के करीब डेढ़ बजे उसे जोरों की प्यास लगी थी। बोतल का पानी समाप्त हो चुका था। बॉगी के सभी यात्री निद्रामग्न थे कि तभी ट्रेन किसी छोटे से स्टेशन पर रूकी और होनी को आमंत्रण देता हुआ प्लेटफार्म पर बॉगी के सामने नल दिखाई दिया। मॉ की हिदायतों बेटा कहीं रास्ते में उतरना मत को नज़रअंदाज करता हुआ वह बोतल लेकर उतर पड़ा। पर यह क्या ? नल में तो पानी ही नहीं आर हा था। थोड़ी दूर पर उसे एक नल और आमंत्रण दे रहा था। वह बोतल लेकर उसी ओर बढ़ गया। पर यह क्या ? जैसे ही वह पानी लेकर पलटा उसे अपनी ट्रेन जाती हुई दिखाई दी। वह दौड़ा पर उसके पहुॅचने से पहले आखिरी डिब्बे ने भी प्लेटफार्म छोड़ दिया। अब वह क्या करे ? उसका सारा सामान, सर्टिफिकेट, पैसा, जहॉं इंटरव्यू होना था उसका पता सब तो ट्रेन के साथ चला गया। अब वह कैसे इंटरव्यू के लिए दिल्ली पहुॅचेगा, उसे चक्कर आने लगा। वह दौड़कर स्टेशन मास्टर के कक्ष में पहुॅचा। उसे अपनी समस्या बताई। स्टेशन मास्टर ने सहानुभूति जताने के स्थान पर उसे डॉट लगाई। किसने कहा था आपसे यहॉं उतरने को। यहॉं पर ट्रेन का स्टोपेज थोड़ी न है वह तो सिग्नल क्लियर नहीं था इसलिए ट्रेन रूक गई थी, अब सुबह तक दिल्ली जानेवाली ट्रेन यहॉं से नहीं गुजरेगी। वह गिड़गिड़ाने लगा। प्लीज सर, कोई उपाय बताइए, मेरे करियर का सवाल है। तो मैं क्या करू ? मैं आपकी कोई मदद नहीं कर सकता। स्टेशन मास्टर से दो टूक जवाव पाकर वह बाहर आकर प्लेटफार्म की बेंच पर बैठ गया। उसकी ऑखों से निरंतर ऑसू बह रहे थे। तभी विपरीत दिशा से एक ट्रेन आती दिखाई दी और उसमें से एक व्यक्ति हाथ में मोबाइल और सूटकेस लेकर उतरा और शायद उसको अकेला देखकर उसी की ओर बढ़ आया और बोला-क्या बात है ? इतने दुखी क्यों हो, कहॉं जाना है ? वह उस व्यक्ति की सहानुभूति पाकर एकदम से फफक पड़ा और अपनी आपबीती कह सुनाई। उस व्यक्ति ने कहा-मेरे साथ स्टेशन मास्टर के पास चलो। वे दोनों स्टेशन मास्टर के पास पहुॅचे। आप इनकी मदद क्यों नहीं कर रहे हैं ? "अच्छा तो अब आप इसके शुभचिंतक बन कर आए हैं।" वह तो हम लोग जो उचित समझेंगे करेंगे पर पहले आप दिल्ली फोन करके वहॉं पर ट्रेन से इनका सामान उतरवाने की व्यवस्था करें। उस व्यक्ति ने कहा। "अच्छा, यह लो भइया। अब इनके कहने से हम इन साहब का सामान उतरवाएँ।" अरे भाई आप होते कौन हैं ? स्टेशन मास्टर ने कहा। उस व्यक्ति ने अपना विजिटिंग कार्ड निकाला जिसे देखकर स्टेशन मास्टर के चेहरे का रंग उड़ गया। वह व्यक्ति रेलवे का एक उच्च अधिकारी था। स्टेशन मास्टर गिड़गिड़ाने लगा। "सर आप कैसे ? आपके आने की पूर्व सूचना नहीं थी।" सॉरी सर। प्लीज सर मुझे माफ कर दीजिए। मैं अभी दिल्ली में उनका सामान उतरवाने की व्यवस्था करता हूॅ। पर सर रात में दिल्ली पहुॅचाने की व्यवस्था वास्तव में नहीं हो पाएगी।

www.xtrapapers.com

क्यों नहीं हो पाएगी ? क्या इस जगह रहनेवालों में से किसी पास के गाड़ी नहीं है ? है सर सरपंच साहब के पास जीप है। उनसे कहकर जीप मँगवाइए। पेट्रौल मैं डलवा दूँगा। इन्हें अगले स्टेशन पर दिल्ली जानेवाली ट्रेन में बिठाकर आएँ। जी सर। वह स्टेशन मास्टर जो अबतक शेर बना बैठा था भीगी बिल्ली बन गया था। आनन फानन में जीप का इंतजाम हो गया। उस भले व्यक्ति ने अपने पैसों से जीप में पेट्रौल डलवाया। अगले स्टेशन से दिल्ली जाने के लिए टिकट का इंतजाम किया और राह खर्च के लिए पैसे दिए। सर आपका यह एहसान मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा और आपके पैसे भी लौटा दूँगा। अपना कार्ड मुझे दे दीजिए। इन पैसों की कोई जल्दी नहीं। मैं इन पैसों को सूद सहित वापस लूँगा पर तुम्हारे सेलेक्शन के बाद। रही मेरे विजिटिंग कार्ड की बात, तो स्टेशन मास्टर साहब से ले लेना। क्यों याद रहेगा न मैं कौन हूँ ? "जी सर।" स्टेशन मास्टर बोला। उसने दिल्ली पहुँच कर इंटरव्यू दिया। परिणाम आया, उसका सेलेक्शन भी हो गया। वह पैसे लेकर स्टेशन पर भी पहुँचा तो पता चला कि स्टेशन मास्टर का स्थानांतरण हो गया क्योंकि यात्रियों के साथ उनका व्यवहार ठीक नहीं था। नए स्टेशन मास्टर ने उससे शालीनता से बात की पर उनके बारे में कुछ न बता सका। उसे जब-जब उस घटना की याद आती है तब उसे लगता है कि यदि भगवान ने उसकी मदद करने के लिए उस व्यक्ति को न भेजा होता तो क्या होता ? वह सोचते-सोचते कुर्सी में बैठे बैठे आँख बँद कर लेता है तभी आँखों के सामने वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगता है। अचानक उस व्यक्ति ने पीतांबर धारण करके मुरली हाथ में ले ली फिर सर्ट पैंट पहनकर मोबाइल हाथ में ले लिया। दोनों ही रूपों में वह मुझे देखकर मुस्करा रहा है, जैसे कह रहा हो। "देखो-देखो, मुझे पहचानो, मैं एक ही हूँ। वह हड़बड़ा कर आँख खोल देता है।"

मीरा सिंहा, *अक्षरा* (नवंबर-दिसम्बर २००९)

– कथानायक के मनोभाव के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

– कहानी में प्रस्तुत केन्द्रीय समस्या के प्रस्तुतीकरण में लेखक कहाँ तक सफल रहा है ?

– उपर्युक्त गद्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

– प्रस्तुत गद्यांश की भाषा-शैली के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

www.xtrapapers.com

२.

सपना एक नहीं है

रामदीन का,
रमाकांत का,
सपना एक नहीं है।
मेहनत की परिभाषा बदली
और हुनर का रूप
अब तो चुल्लू में आ जाता है
गहरा नलकूप,
खोना-पाना
अपना-अपना
नपना एक नहीं है।
बॉस पुराना खपरैल का
कब से लचक रहा है
बात मान ले बेटे की
लेकिन मन छिनक रहा है।
जाग रही हर एक ऑंख का
जगना एक नहीं है।
कहीं मामला बिगड़ न जाए
कैसे करें मना
पिछली बारिश में टूटा पुल
अब तक नहीं बना।
दो घाटों के लिए
नदी का बहना एक नहीं है।
शक्ति प्रदर्शन पर आमादा
उत्साहित इच्छाएँ
जंगल को झकझोर रही है।
अनुभवहीन हवाएँ
जितने पेड़ गिरे हैं
सबका गिरना एक नहीं है।

गणेश गंभीर, *सप्तरंग दैनिक जागरण* (अगस्त २०१०)

– इस कविता के शीर्षक की सार्थकता एवं चयन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

– कविता की विषय वस्तु एवं केन्द्रीय भाव को कवि कहाँ तक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है ?

– कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतीकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

– इस कविता की विषयवस्तु ने आपके मन पर क्या प्रभाव डाला है ?